NJ-1004

B.A. (Part-I) Examination,

Mar.-Apr., 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(प्राचीन हिन्दी काव्य)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 75

Minimum Pass Marks : 25

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। अशुद्ध एवं अनर्गल लेखन पर अंक काटे जाएंगे। एक प्रश्न के सभी खण्डों का उत्तर एक ही स्थान पर निरन्तरता बनाए हुए लिखिए। उत्तर की समाप्ति पर समाप्ति सूचक चिह्न का प्रयोग करें।

Q. 1. निम्नलिखित पद्यांशों का सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **7×3**

(1) रामनाम कै पटंतरै, देवे को कुछ नाहिं।

क्या ले गुर संतोषिए, हौस रही मन माहि।।

सतगुरु मिल्या त का भया, जे मन पाड़ी भोल।

पासि बिनंठा कप्पड़ा, क्या करे बिचारी चोल।।

अथवा

फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीक जाइ नहीं सहा।

तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होई झोरा।।

तरिवर अरहिं भरहिं बन दाखा। भई ओनंत फूल फरि शाखा।

करिन्ह वनस्पति हिये कुलसू। मो कहँ भा जग दून उदासू।।

फागु करहिं सब चांचीर जोरी। मोही तन लाइ दीरू जस होरी।।

(2) निरगुन कौन देश कौ बासी ?

मधुकर कहि समुझाइ सौंह दे, बूझति सांचि न हाँसि।

को हे जनक, कौन हें जननी, कौन नारि, कौन दासी ?

केसो वरन भेष है कैसो, किंहि रस मैं अभिलाषी ?

पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ, गांसी।

सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरी, सूर सबै मति नासी।।

अथवा

जो रघुबीर होत सुधिपाई। करत नहि विलंब रघुराई।।

रामबान रवि उदय जानकी। तुम वरुथ कहँ यातुधान की।।

अबहिं मातु मैं जाऊँ लिवाई। प्रभु आयसु नहिं रामदुहाई।।

कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित ऐहैं रघुबीरा।।

निसिचर मारि तोहिं लै जैहैं। तिहुँपुर नारदादि जस जैहैं।

कछु सुत कपि सब तुम्हिं समाना। यातुधान भर अति बलवाना।।

(3) मति सुजान अनीति करौ जिन हा हा न हूजियै मोहि अमोही।

दीठि कौ और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।

एक बिसास की टेक गहें लगि आस रहै बस प्रान।

हौ घनआनन्द जीवन मूल दई, किस प्यासनी मारत।।

अथवा

आसा-गुन बाँधि कै भरोसो-सिल धारि छाती।

पूरे पन-सिंधु मैं न बूड़त सकाय हौं।।

दुख-दव हिए जारि अंतर उदेग आँच।

रोम-रोम त्रासनि निरन्तर तचाय हौं।।

Q. 2. कबीर की साहित्यगत् विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **12**

अथवा

'नागमति के वियोग में लोक संस्कृति की झलक मिलती है।' इस कथन के आलोक में जायसी की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

Q. 3. 'सूरदास ने भ्रमरगीत के माध्यम से ज्ञान पर भक्ति की विजय दिलाई है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। **12**

अथवा

घनानंद के काव्य का मूल 'प्रेम' है। इस कथन को सविस्तार समझाइए ?

Q. 4. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए : **5×3**

(1) भक्तिकाल की धार्मिक परिस्थितियाँ

(2) अष्टछाप कवियों का परिचय

(3) रीतिमुक्त काव्य धारा

(4) विद्यापति की सौंदर्य चेतना

(5) रहीम की प्रासंगिकता

(6) रसखान का कृष्ण-प्रेम

Q. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पंद्रह प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर लिखिए (उत्तर पूरे वाक्य में लिखिए) : **1×15**

(1) 'बीजक' के रचनाकार का नाम लिखिए।

(2) संत रैदास भक्तिकाल में किस धारा के कवि थे ?

(3) 'तुलसी' की भक्तिभावना किस प्रकार की थी ?

(4) 'वात्सल्य के चितेरे' कौन से कवि कहलाते हैं ?

(5) 'जायसी' के जन्म कहाँ हुआ ?

P.T.O.

(6) 'मसनबी-शैली' से क्या तात्पर्य है ?

(7) 'पुष्टि मार्ग' का जहाज किसे कहा जाता है ?

(8) हिन्दी साहित्य का 'स्वर्णयुग' किसे माना जाता है ?

(9) 'जानकी मंगल' की रचना किस कवि ने की है ? लिखिए।

(10) 'रामचरित मानस' की भाषा कौन सी है ?

(11) घनानंद किस मुगल शासक के मीर-मुंशी थे ?

(12) हिन्दी साहित्य में 'मैथिल कोकिल' से किस कवि को जाना जाता है ?

(13) 'कीर्तिपताका' की रचना किस कवि ने की थी ? लिखिए।

(14) रहीम के पिता का नाम बताइए ?

(15) खानखाना की उपाधि किस कवि को कौन से मुगल बादशाह ने प्रदान की थी ?

(16) 'रसखान' के गुरू कौन थे ?

(17) प्रेमवाटिका के रचनाकार कौन थे, यह किस छन्द में लिखी गई है ?